Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

छत्तीसगढ़ के बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में मतदान व्यवहार के निर्धारक: एक आंतर-अनुभागीय सर्वेक्षण से साक्ष्य

प्रभात मिश्रा [1*], डॉ. सुधा शुक्ला [2], डॉ. रेनू शरण [3]

[1] शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान), डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

[2] सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान), डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

[3] सहायक प्राध्यापक एवं शाखा प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान), डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author: * प्रभात मिश्रा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.24030334

सारांश

भारत में मतदान व्यवहार लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आयाम है। मतदाता द्वारा किसी राजनीतिक दल अथवा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने का निर्णय केवल किसी एक कारक से निर्धारित नहीं होता, बल्कि सामाजिक पहचान, जाति, वर्ग, शिक्षा, आय, राजनीतिक जागरूकता, प्रत्याशी की छवि, राजनीतिक दल की नीतियाँ, शासन के प्रदर्शन, स्थानीय विकास, कल्याणकारी योजनाओं तथा नेतृत्व जैसे अनेक कारकों की अंतःक्रिया से निर्मित होता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक निर्धारकों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में आंतर-अनुभागीय सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा अध्ययन की प्रस्तावित/निर्धारित नमूना संख्या 400 उत्तरदाताओं की है। अध्ययन में प्राथमिक सूचना के लिए संरचित प्रश्नावली तथा द्वितीयक सूचना के लिए निर्वाचन आयोग की चुनावी रिपोर्टों, पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं उपलब्ध चुनाव-अध्ययनों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का सैद्धांतिक आधार समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक एवं तर्कसंगत चयन दृष्टिकोणों के समन्वित प्रयोग पर आधारित है। बेलतरा जैसे सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से विविध निर्वाचन क्षेत्र में जाति और समुदाय मतदाता की सामाजिक पहचान को प्रभावित कर सकते हैं, किंतु समकालीन चुनावी राजनीति में इन कारकों के साथ प्रत्याशी की व्यक्तिगत छवि, विकास कार्य, सरकारी योजनाओं का लाभ, दल की विश्वसनीयता, नेतृत्व तथा स्थानीय मुद्दों का महत्व भी बढ़ा है। उपलब्ध निर्वाचन आँकड़ों के अनुसार 2023 के विधानसभा चुनाव में बेलतरा में 66.24 प्रतिशत मतदान दर्ज हुआ, जो निर्वाचन क्षेत्र में पर्याप्त चुनावी सहभागिता को दर्शाता है। अध्ययन का केंद्रीय तर्क यह है कि बेलतरा में मतदान व्यवहार को किसी एक 'निर्धारक' से समझना पर्याप्त नहीं है; बल्कि सामाजिक संरचना और राजनीतिक प्रदर्शन के बीच अंतःक्रिया को समझना आवश्यक है। अध्ययन स्थानीय स्तर पर मतदाता व्यवहार की प्रकृति को समझने के साथ-साथ भारतीय लोकतंत्र में बदलती चुनावी प्राथमिकताओं के अध्ययन में योगदान देता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 10-08-2026
- **Accepted:** 28-10-2026
- **Published:** 07-11-2026
- **MRR:**4(11); 2026: 36-41
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

मिश्रा प्र, शुक्ला सु, शरण रे . छत्तीसगढ़ के बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में मतदान व्यवहार के निर्धारक: एक आंतर-अनुभागीय सर्वेक्षण से साक्ष्य. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(11): 36-41.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मूल शब्द: मतदान व्यवहार, मतदाता, बेलतरा, विधानसभा निर्वाचन, राजनीतिक सहभागिता, जाति, प्रत्याशी, राजनीतिक दल, विकास, चुनावी राजनीति, छत्तीसगढ़।

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

1. प्रस्तावना

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में चुनाव नागरिकों को शासन के निर्माण तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व में प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर प्रदान करते हैं। मतदान इस प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, जिसके माध्यम से नागरिक अपनी राजनीतिक पसंद, असहमति और अपेक्षाओं को अभिव्यक्त करते हैं। मतदान व्यवहार का अध्ययन केवल यह जानने तक सीमित नहीं है कि मतदाता ने किस दल या प्रत्याशी को वोट दिया, बल्कि इसका संबंध इस बात से है कि उसने विशेष राजनीतिक विकल्प का चयन क्यों किया और उसके निर्णय को कौन-कौन से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक प्रभावित करते हैं। भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार विशेष रूप से जटिल है। जाति, धर्म, भाषा, वर्ग, क्षेत्रीय पहचान, आर्थिक स्थिति तथा राजनीतिक विचारधारा जैसे पारंपरिक कारकों के साथ-साथ विकास, कल्याणकारी योजनाएँ, प्रत्याशी की व्यक्तिगत छवि, नेतृत्व, मीडिया और सोशल मीडिया भी चुनावी निर्णयों को प्रभावित करने लगे हैं। भारतीय मतदाता को केवल जाति या समुदाय के आधार पर मतदान करने वाला मतदाता मानना वर्तमान परिस्थितियों की पर्याप्त व्याख्या नहीं करता। हाल के अध्ययनों में जाति और वर्ग के संयुक्त प्रभाव के साथ-साथ सामाजिक समूहों की बदलती राजनीतिक प्राथमिकताओं पर बल दिया गया है (Palshikar & Mishra, 2023)। इसी प्रकार भारतीय चुनावों में मतदाता की राजनीतिक सक्रियता भी महत्वपूर्ण है। Lokniti के चुनाव-अध्ययनों ने यह रेखांकित किया है कि भारत में मतदान नागरिकता, राजनीतिक अधिकार, शासन के मूल्यांकन तथा लोकतांत्रिक सहभागिता के अनुभव से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए मतदाता व्यवहार को केवल चुनावी परिणामों के सांख्यिकीय अध्ययन के रूप में नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक नागरिकता के व्यापक संदर्भ में देखना आवश्यक है। बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। निर्वाचन आयोग के 2023 के आँकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र में कुल 2,48,729 निर्वाचक थे और 1,64,758 मत दर्ज हुए। मतदान प्रतिशत 66.24 रहा। 2023 के चुनाव में भाजपा के सुशांत शुक्ला को 79,528 मत तथा कांग्रेस के विजय केशरवानी को 62,565 मत प्राप्त हुए।

2018 के चुनावी संदर्भ में भी बेलतरा में प्रतिस्पर्धी द्विदलीय राजनीति दिखाई देती है। निर्वाचन संबंधी उपलब्ध आधिकारिक आँकड़ों में इस निर्वाचन क्षेत्र में 2018 में 2,11,408 निर्वाचक दर्ज थे तथा कुल 1,43,930 मत पड़े थे। यह परिवर्तन निर्वाचन क्षेत्र में मतदाता आधार के विस्तार और चुनावी प्रतिस्पर्धा की निरंतरता को समझने के लिए उपयोगी है। इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध बेलतरा के मतदाताओं के मतदान व्यवहार को सामाजिक पहचान, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक जागरूकता, प्रत्याशी, राजनीतिक दल, विकास तथा शासन के प्रदर्शन जैसे विभिन्न आयामों के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है।

2. अध्ययन की समस्या

भारतीय चुनावों में मतदान व्यवहार की व्याख्या लंबे समय तक जाति, धर्म और समुदाय जैसे सामाजिक कारकों के आधार पर की जाती रही है। हालांकि, आर्थिक परिवर्तन, शिक्षा का विस्तार, संचार माध्यमों का प्रसार, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच तथा राजनीतिक दलों के चुनावी अभियानों में परिवर्तन के कारण मतदाता की प्राथमिकताओं में भी परिवर्तन आया है। बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक समूहों की उपस्थिति, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का सह-अस्तित्व तथा राजनीतिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा मतदान व्यवहार को बहुआयामी बनाते हैं। इसलिए मुख्य शोध समस्या यह है कि:

"बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में मतदाताओं के मतदान निर्णय को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों में से कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं तथा इन कारकों का मतदाता की राजनीतिक पसंद के साथ किस प्रकार संबंध स्थापित होता है?"

3. अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बेलतरा विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
3. जाति, वर्ग, शिक्षा, आय एवं व्यवसाय तथा मतदान व्यवहार के बीच संबंध का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों की छवि के प्रभाव का विश्लेषण करना।
5. स्थानीय विकास एवं शासन के प्रदर्शन को मतदाता निर्णय के संदर्भ में समझना।
6. राजनीतिक जागरूकता तथा मतदान निर्णय के बीच संबंध का परीक्षण करना।
7. कल्याणकारी योजनाओं एवं व्यक्तिगत/परिवारिक लाभ के चुनावी प्रभाव का अध्ययन करना।
8. बेलतरा क्षेत्र में पारंपरिक एवं समकालीन मतदान निर्धारकों के बीच अंतःक्रिया का विश्लेषण करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ

H_1: मतदाताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि और उनके मतदान व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

H_2: राजनीतिक जागरूकता का स्तर मतदान निर्णय को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

H_3: प्रत्याशी की व्यक्तिगत छवि मतदान व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक है।

H_4: स्थानीय विकास एवं सरकारी योजनाओं के प्रति मतदाता की धारणा उसके मतदान निर्णय को प्रभावित करती है।

H_5: शिक्षा एवं आर्थिक स्थिति में अंतर मतदाताओं की राजनीतिक प्राथमिकताओं में अंतर उत्पन्न करता है।

H_6: समकालीन चुनावी राजनीति में केवल जातीय पहचान की अपेक्षा प्रत्याशी, दल, विकास एवं शासन-प्रदर्शन जैसे कारकों का संयुक्त प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

5. साहित्य समीक्षा

मतदान व्यवहार के अध्ययन में विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण विकसित हुए हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण मतदाता की सामाजिक पृष्ठभूमि को उसके राजनीतिक व्यवहार से जोड़ता है। भारतीय संदर्भ में जाति और समुदाय चुनावी राजनीति के महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। Kothari

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

(1970) ने भारतीय राजनीति में जाति और राजनीतिक प्रक्रिया के पारस्परिक संबंध को महत्वपूर्ण माना। जाति राजनीतिक लामबंदी का माध्यम भी बनती है और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए सामाजिक आधार भी उपलब्ध कराती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण मतदाता की राजनीतिक पार्टी के प्रति मनोवैज्ञानिक निकटता, नेतृत्व की छवि तथा राजनीतिक विश्वास को महत्व देता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार मतदाता का निर्णय केवल तत्कालीन मुद्दों से नहीं, बल्कि लंबे समय में निर्मित राजनीतिक अभिवृत्तियों से भी प्रभावित हो सकता है। तर्कसंगत चयन दृष्टिकोण मतदाता को ऐसा राजनीतिक अभिनेता मानता है जो उपलब्ध विकल्पों में से अपने हितों के अनुरूप विकल्प चुनता है। भारतीय संदर्भ में यह दृष्टिकोण विकास, रोजगार, कल्याणकारी योजनाओं, मूल्य वृद्धि, स्थानीय सुविधाओं और शासन के प्रदर्शन जैसे मुद्दों के महत्व को समझने में उपयोगी है। **Akhter (2014)** ने भारतीय मतदान व्यवहार में सामाजिक एवं राजनीतिक कारकों के साथ नेतृत्व, धन, धार्मिक तथा सामुदायिक प्रभावों की भूमिका पर चर्चा की। Shafi और Chandrashekhar (2018) ने भी मतदान व्यवहार को बहुआयामी प्रक्रिया माना जिसमें जाति, धर्म, समुदाय, भाषा, नीति, विचारधारा और राजनीतिक दल जैसे कारक सम्मिलित हैं। समकालीन भारतीय चुनावों पर किए गए अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि सामाजिक पहचान का महत्व समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि वह वर्ग, राजनीतिक दल तथा चुनावी संदर्भ के साथ मिलकर कार्य करती है। Palshikar और Mishra (2023) ने 1996–2019 के National Election Studies के आधार पर जाति और वर्ग के संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण करते हुए सामाजिक स्थिति और चुनावी पसंद के बीच जटिल संबंध की ओर संकेत किया।

इसी प्रकार भारतीय मतदाता में सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक प्राथमिकताओं के बदलाव पर Suri (2019) ने चर्चा की है। हाल के साहित्य में नेतृत्व, राजनीतिक संचार, सोशल मीडिया तथा चुनावी संदेशों के महत्व को भी रेखांकित किया गया है। 2024 की एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा के अनुसार राष्ट्रीय और राज्य चुनावों में प्रभावकारी कारकों की प्रकृति अलग हो सकती है; राज्य चुनावों में पार्टी नीति, विचारधारा और जमीनी चुनाव अभियान का विशेष महत्व पाया गया।

इस प्रकार साहित्य से स्पष्ट है कि मतदान व्यवहार का अध्ययन बहु-कारकीय दृष्टिकोण से किया जाना अधिक उपयुक्त है। प्रस्तुत अध्ययन इसी बहुआयामी दृष्टिकोण को बेलतरा के स्थानीय संदर्भ में लागू करता है।

6. सैद्धांतिक आधार

प्रस्तुत अध्ययन तीन प्रमुख दृष्टिकोणों के समन्वय पर आधारित है—

6.1 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण मतदाता की सामाजिक स्थिति को मतदान व्यवहार से जोड़ता है। जाति, धर्म, समुदाय, परिवार, स्थानीय सामाजिक नेटवर्क तथा क्षेत्रीय पहचान मतदाता के राजनीतिक निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं।

6.2 मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

इसमें राजनीतिक दल के प्रति लगाव, प्रत्याशी के प्रति विश्वास, नेतृत्व की छवि, राजनीतिक मूल्य और पूर्व राजनीतिक अनुभव जैसे कारकों को महत्व दिया जाता है।

6.3 तर्कसंगत चयन दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार मतदाता उपलब्ध राजनीतिक विकल्पों का मूल्यांकन अपने हितों के आधार पर करता है। रोजगार, विकास, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाएँ, महँगाई तथा स्थानीय समस्याएँ इसके अंतर्गत आती हैं। बेलतरा जैसे निर्वाचन क्षेत्र में इन तीनों दृष्टिकोणों का संयुक्त प्रयोग मतदान व्यवहार की अधिक व्यापक व्याख्या प्रस्तुत कर सकता है।

7. अनुसंधान पद्धति

7.1 अनुसंधान डिजाइन

अध्ययन में **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक आंतर-अनुभागीय सर्वेक्षण डिजाइन (cross-sectional survey design)** का प्रयोग किया गया है। आंतर-अनुभागीय अध्ययन में किसी विशिष्ट समयावधि में विभिन्न सामाजिक समूहों से सूचना एकत्र करके उनके बीच मौजूद प्रवृत्तियों और संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

7.2 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र **बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र, जिला बिलासपुर, छत्तीसगढ़** है। बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र सामान्य श्रेणी का निर्वाचन क्षेत्र है और यहां बहुदलीय चुनावी प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है।

7.3 नमूना

अध्ययन में कुल **400 उत्तरदाताओं** को नमूना बनाया गया है। नमूना चयन में सामाजिक, लैंगिक, आयु तथा ग्रामीण-शहरी प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखा जाना प्रस्तावित है।

7.4 प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक आँकड़े संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किए गए हैं/किए जाने हैं। प्रश्नावली में उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, मतदान की आदत, राजनीतिक जागरूकता, पार्टी प्राथमिकता, प्रत्याशी की छवि, विकास, सरकारी योजनाओं तथा चुनावी मुद्दों से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए हैं।

7.5 द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक सूचना के लिए निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट, छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव संबंधी आँकड़े, शोध-पत्र, पुस्तकें, शोध-प्रबंध तथा संबंधित अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है।

7.6 विश्लेषण की तकनीक

प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आवृत्ति, प्रतिशत, क्रॉस-टैबुलेशन तथा आवश्यकतानुसार Chi-square test का प्रयोग किया जा सकता है। प्रमुख चर के मध्य संबंध की जांच के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षणों का उपयोग किया जाएगा।

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

8. बेलतरा का चुनावी परिप्रेक्ष्य

बेलतरा में मतदान व्यवहार को समझने के लिए निर्वाचन क्षेत्र के चुनावी रुझानों को संदर्भित करना आवश्यक है। 2023 में बेलतरा में 2,48,729 निर्वाचक थे तथा 1,64,758 मत दर्ज हुए। निर्वाचन आयोग के आँकड़ों में मतदान प्रतिशत 66.24 प्रतिशत दर्ज है। 2023 के परिणाम में भाजपा के सुशांत शुक्ला को 79,528 मत प्राप्त हुए, जबकि कांग्रेस के विजय केशरवानी को 62,565 मत मिले। बहुजन समाज पार्टी के रामकुमार सूर्यवंशी को 15,118 मत प्राप्त हुए।

यह परिणाम दर्शाता है कि बेलतरा में प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ तीसरे राजनीतिक विकल्प के लिए भी एक मत-आधार मौजूद है। 2018 की तुलना में 2023 के निर्वाचन क्षेत्र में निर्वाचक संख्या में वृद्धि हुई, जिससे मतदाता संरचना में परिवर्तन का संकेत मिलता है। 2018 के आधिकारिक निर्वाचन आँकड़ों में कुल 2,11,408 निर्वाचक दर्ज थे।इस चुनावी संदर्भ से स्पष्ट है कि बेलतरा में मतदान व्यवहार को समझने के लिए केवल चुनाव परिणाम पर्याप्त नहीं हैं। यह जानना आवश्यक है कि मतदाता अपने राजनीतिक विकल्प का चयन किन कारणों से करते हैं।

9. मतदान व्यवहार के प्रमुख निर्धारक

9.1 जाति एवं सामाजिक पहचान

भारतीय राजनीति में जाति लंबे समय से राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व का महत्वपूर्ण आधार रही है। बेलतरा में भी मतदाताओं की सामाजिक पहचान उनके राजनीतिक विचारों और उम्मीदवार की स्वीकार्यता को प्रभावित कर सकती है। हालांकि जाति को मतदान का स्वतः निर्णायक मानना उचित नहीं होगा। आधुनिक चुनावों में जातीय पहचान अन्य मुद्दों जैसे विकास, नेतृत्व तथा पार्टी के साथ अंतःक्रिया करती है।

9.2 प्रत्याशी की व्यक्तिगत छवि

मतदाता किसी राजनीतिक दल के साथ-साथ उम्मीदवार के व्यक्तित्व, ईमानदारी, उपलब्धता, व्यवहार तथा स्थानीय संपर्क को भी महत्व दे सकता है। विशेष रूप से विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी और मतदाता के बीच प्रत्यक्ष संबंध अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

9.3 राजनीतिक दल

राजनीतिक दल की विचारधारा, संगठन, स्थानीय कार्यकर्ता, घोषणापत्र, नेतृत्व तथा सरकार के प्रदर्शन से संबंधित धारणा मतदान निर्णय को प्रभावित कर सकती है।

9.4 विकास

सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा स्थानीय अधोसंरचना जैसे मुद्दे मतदाता की प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। विधानसभा चुनाव में स्थानीय विकास का मूल्यांकन राष्ट्रीय मुद्दों की अपेक्षा अधिक प्रत्यक्ष हो सकता है।

9.5 सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ

यदि किसी मतदाता या परिवार को सरकारी योजना से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ है, तो उसके शासन और संबंधित राजनीतिक दल के प्रति दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए कल्याणकारी योजनाएँ मतदान व्यवहार के आर्थिक एवं राजनीतिक दोनों आयामों को जोड़ती हैं।

9.6 शिक्षा

शिक्षा राजनीतिक सूचना प्राप्त करने, चुनावी घोषणापत्र समझने और उम्मीदवारों के तुलनात्मक मूल्यांकन की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। हालांकि अधिक शिक्षा का अर्थ किसी एक विशेष राजनीतिक दल को समर्थन देना नहीं है; बल्कि यह राजनीतिक विकल्पों के मूल्यांकन की शैली में अंतर उत्पन्न कर सकती है।

9.7 आर्थिक स्थिति

आय, रोजगार तथा आर्थिक सुरक्षा मतदाता के मुद्दा-आधारित निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग रोजगार, खाद्य सुरक्षा, आवास और कल्याणकारी योजनाओं को अधिक प्राथमिकता दे सकते हैं, जबकि अन्य समूह विकास, कर, व्यवसाय और अधोसंरचना जैसे मुद्दों पर अधिक ध्यान दे सकते हैं।

9.8 राजनीतिक जागरूकता

राजनीतिक जागरूकता मतदान की गुणवत्ता से जुड़ा महत्वपूर्ण कारक है। राजनीतिक रूप से जागरूक मतदाता उम्मीदवारों, दलों, घोषणापत्रों और सरकारी प्रदर्शन की तुलना करने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम हो सकता है।

9.9 मीडिया एवं सोशल मीडिया

समकालीन चुनावी राजनीति में सोशल मीडिया राजनीतिक संदेशों, प्रचार, नेतृत्व की छवि और मुद्दों के प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इसका प्रभाव विशेषकर युवा मतदाताओं के बीच अध्ययन योग्य है। हालांकि सोशल मीडिया सूचना के साथ-साथ गलत सूचना और राजनीतिक ध्रुवीकरण का माध्यम भी बन सकता है।

10. प्रस्तावित अनुभवजन्य विश्लेषण

400 उत्तरदाताओं के सर्वेक्षण में निम्न प्रमुख आयामों को मापा जाना चाहिए—

आयाम	प्रमुख संकेतक
सामाजिक पृष्ठभूमि	जाति, लिंग, आयु, ग्रामीण/शहरी
आर्थिक स्थिति	आय, व्यवसाय, रोजगार
शिक्षा	अशिक्षित से उच्च शिक्षा
राजनीतिक जागरूकता	राजनीतिक जानकारी, चुनावी मुद्दों की जानकारी

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

दलगत प्रभाव	पार्टी पसंद, पार्टी संगठन
प्रत्याशी प्रभाव	छवि, ईमानदारी, उपलब्धता
विकास	सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य
शासन	सरकार का प्रदर्शन
कल्याणकारी योजनाएँ	लाभ प्राप्ति एवं संतुष्टि
मीडिया	टीवी, समाचारपत्र, सोशल मीडिया
सामाजिक प्रभाव	परिवार, समुदाय, स्थानीय नेटवर्क
मतदान निर्णय	पार्टी/प्रत्याशी/मुद्दा आधारित निर्णय

इन आयामों के आधार पर प्रत्येक चर की आवृत्ति और प्रतिशत निर्धारित किया जा सकता है। इसके बाद सामाजिक-आर्थिक चर और मतदान व्यवहार के मध्य क्रॉस-टैबुलेशन किया जा सकता है।

11. परिकल्पनाओं के परीक्षण की प्रस्तावित रूपरेखा

जाति और मतदान व्यवहार के बीच संबंध का परीक्षण Chi-square द्वारा किया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षा, आयु, आय तथा राजनीतिक जागरूकता जैसे स्वतंत्र चरों को मतदान निर्णय से क्रॉस-टैबुलेट किया जा सकता है। यदि प्रत्याशी की छवि, विकास, सरकारी योजनाओं और राजनीतिक दल की विश्वसनीयता को Likert scale पर मापा गया है, तो उनके औसत स्कोर की तुलना की जा सकती है। आगे चलकर logistic regression के माध्यम से यह भी जांचा जा सकता है कि कौन-से कारक मतदान की किसी विशिष्ट राजनीतिक पसंद की संभावना को स्वतंत्र रूप से प्रभावित करते हैं। इस प्रकार केवल प्रतिशत आधारित वर्णन के स्थान पर inferential statistics का प्रयोग अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और प्रकाशन योग्य बनाएगा।

12. चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन की अवधारणा से यह स्पष्ट होता है कि बेलतरा में मतदान व्यवहार को किसी एक सामाजिक कारक से समझना पर्याप्त नहीं होगा। भारतीय चुनाव-अध्ययन में सामाजिक पहचान महत्वपूर्ण बनी हुई है, किंतु मतदाता राजनीतिक दल, उम्मीदवार और शासन के प्रदर्शन का मूल्यांकन भी करता है। Palshikar और Mishra (2023) का अध्ययन भी जाति और वर्ग के संयुक्त प्रभाव की जटिलता को रेखांकित करता है। इसी प्रकार भारतीय मतदाता को केवल 'परंपरागत' सामाजिक समूह के सदस्य के रूप में देखना उचित नहीं है। शिक्षा, मीडिया, सरकारी योजनाओं, राजनीतिक संचार और आर्थिक अपेक्षाओं ने मतदाता की राजनीतिक जानकारी और निर्णय-प्रक्रिया को अधिक बहुआयामी बनाया है। बेलतरा के 2023 के चुनावी परिणामों में भाजपा और कांग्रेस के बीच स्पष्ट प्रतिस्पर्धा तथा तीसरे विकल्प को मिले उल्लेखनीय मत इस बात का संकेत देते हैं कि निर्वाचन क्षेत्र में बहुस्तरीय राजनीतिक विकल्प मौजूद हैं। इसलिए बेलतरा में मतदाता व्यवहार के अध्ययन का उचित मॉडल ऐसा होना चाहिए जिसमें **सामाजिक पहचान + प्रत्याशी मूल्यांकन + दलगत प्राथमिकता + विकास + शासन प्रदर्शन + व्यक्तिगत आर्थिक हित + राजनीतिक जागरूकता** को एक संयुक्त ढाँचे में देखा जाए।

13. निष्कर्ष

मतदान व्यवहार लोकतांत्रिक राजनीति की समझ का केंद्रीय विषय है। बेलतरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के संदर्भ में यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि मतदाता का चुनावी निर्णय बहुआयामी प्रक्रिया है। जाति और सामाजिक पहचान जैसे पारंपरिक कारक आज भी राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन उनका प्रभाव प्रत्याशी, राजनीतिक दल, विकास, कल्याणकारी योजनाओं, शासन के प्रदर्शन और राजनीतिक जागरूकता जैसे कारकों के साथ मिलकर कार्य करता है। 2023 के निर्वाचन में बेलतरा में 66.24 प्रतिशत मतदान तथा प्रमुख दलों के बीच प्रतिस्पर्धी परिणाम इस निर्वाचन क्षेत्र की सक्रिय चुनावी प्रकृति को दर्शाते हैं।अध्ययन का व्यापक निष्कर्ष यह है कि बेलतरा के मतदाता को केवल जातीय अथवा दलगत मतदाता के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। आधुनिक मतदाता अपनी सामाजिक पहचान के साथ-साथ राजनीतिक प्रदर्शन, स्थानीय विकास, प्रत्याशी की व्यक्तिगत छवि तथा सरकारी योजनाओं से प्राप्त अनुभव को भी ध्यान में रख सकता है। लोकतांत्रिक दृष्टि से यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है। यदि मतदाता केवल पहचान के आधार पर नहीं, बल्कि नीतियों और शासन के प्रदर्शन के आधार पर भी राजनीतिक विकल्पों का मूल्यांकन करता है, तो यह लोकतांत्रिक जवाबदेही को मजबूत कर सकता है। दूसरी ओर, सामाजिक पहचान और सामुदायिक लामबंदी का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इसलिए बेलतरा में मतदान व्यवहार को परंपरागत सामाजिक संरचनाओं और आधुनिक राजनीतिक अपेक्षाओं के अंतर्संबंध के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। अंततः, 400 उत्तरदाताओं पर आधारित प्राथमिक सर्वेक्षण के वास्तविक आँकड़ों के सांख्यिकीय परीक्षण से यह अधिक स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जा सकेगा कि बेलतरा में कौन-से कारक सांख्यिकीय रूप से सबसे प्रभावशाली हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन स्थानीय स्तर के चुनाव-अध्ययन, मतदाता व्यवहार और छत्तीसगढ़ की समकालीन राजनीतिक प्रक्रिया को समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

14. अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन एक विशिष्ट विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र तक सीमित है।
2. 400 उत्तरदाताओं का नमूना पूरे छत्तीसगढ़ के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता।
3. मतदान व्यवहार से संबंधित प्रश्नों में सामाजिक वांछनीयता (social desirability) का प्रभाव संभव है।
4. चुनावी प्राथमिकताएँ समय के साथ बदल सकती हैं।
5. मतदाता द्वारा बताए गए कारण और वास्तविक मतदान निर्णय में अंतर संभव है।
6. भविष्य के अध्ययनों में अन्य विधानसभा क्षेत्रों के तुलनात्मक अध्ययन से निष्कर्षों की व्यापकता बढ़ाई जा सकती है।

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

15. शोध का सामाजिक एवं अकादमिक महत्व

यह अध्ययन स्थानीय स्तर पर लोकतांत्रिक सहभागिता को समझने में उपयोगी है। इससे राजनीतिक दलों, नीति-निर्माताओं, निर्वाचन अध्ययन के शोधकर्ताओं तथा राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिल सकती है कि मतदाता किन मुद्दों को प्राथमिकता देता है। अध्ययन विशेष रूप से इस प्रश्न को समझने में योगदान देता है कि क्या समकालीन मतदाता पारंपरिक सामाजिक पहचान से आगे बढ़कर विकास, शासन और प्रत्याशी के प्रदर्शन को भी अपने मतदान निर्णय का आधार बना रहा है। इस दृष्टि से बेलतरा का अध्ययन भारतीय लोकतंत्र में बदलती मतदाता संस्कृति की स्थानीय अभिव्यक्ति को समझने का अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. Akhter Z. Determinants of voting behaviour in India: theoretical perspective. Public Policy Adm Res. 2014;4(8):110-4.
2. Kothari R, editor. Caste in Indian politics. New Delhi: Orient Longman; 1970.
3. Mathur V. 'Modi'-fied beliefs: assessing cognitive dissonance in populist voting behaviour in India. South Asia J South Asian Stud. 2023;46(5):1028-48. doi:10.1080/00856401.2023.2218688.
4. Palshikar S, Deshpande R. Introduction to the special section: the Indian voter. Stud Indian Polit. 2023;11(2):205-7. doi:10.1177/23210230231205900.
5. Palshikar S, Mishra J. Caste, class and vote: consolidation of the privileged and dispersal of underprivileged. Stud Indian Polit. 2023;11(2):258-73. doi:10.1177/23210230231203792.
6. Shafi S, Chandrashekhar M. Theoretical perspective of voting behaviour in India: approaches and determinants. Int J Res. 2018;5(12):1-8.
7. Suri KC. Social change and the changing Indian voter: consolidation of the BJP in India's 2019 Lok Sabha election. Stud Indian Polit. 2019;7(2):234-46. doi:10.1177/2321023019874913.
8. Election Commission of India. Statistical report: general election to the Legislative Assembly of Chhattisgarh, 2023. New Delhi: Election Commission of India; 2023.
9. Election Commission of India. Constituency data summary: general election to the Legislative Assembly of Chhattisgarh, 2018. Raipur: Chief Electoral Officer, Chhattisgarh; 2018.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author



प्रभात मिश्र छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा के सामाजिक विज्ञान संकाय में राजनीति विज्ञान विषय के शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि राजनीति विज्ञान, शासन व्यवस्था, लोक प्रशासन तथा समकालीन राजनीतिक घटनाक्रमों में है। वे शोध एवं अकादमिक क्षेत्र में योगदान हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

© 2026 प्रभात मिश्रा, डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. रेनू शरण. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/